सूर्य्यपुराण भाषा

जिसमें

श्री सूर्य्यनारायण जी का माहात्म्य पद्मपुराणानुसार दोहा चौपाई व मनोहर छन्दों से विभूषित है॥

जो कि

उन्नामप्रदेशान्तर्गत पँड़रीकलांनिवासि मिश्र वंशोद्भव बुध कृपाशङ्करसूनु पण्डित ललिता प्रसाद स्वर्गवासीजी ने शुद्ध किया था॥

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी – **नवल किशोर प्रेस बुक डिपो, लखनऊ**

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा

अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ में मुद्रित

सातवीं बार] सन् २००४ ई० [मूल्य : ८ रुपये

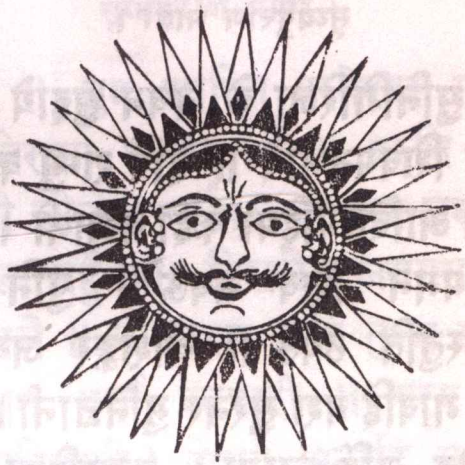

सूर्य्यपुराण भाषा ।।

—:०:—

दोहा ।।

गणपति फणपति देवपति रविशशिपवनपुनीत ।।
गुरुगोविन्दसँभारिउर बिनतीकरौं सप्रीत १
सबगति देहुमोहिं प्रभु करौं कथा कर गान ।।
हरिको नाम विचारि उर भाषौं सूर्य्य पुरान २
एकसमय गिरिजा सहित बठे कृपा निकेत ।।
बोलीं गिरिजा वचनवर जोरिपाणि अतिहेत ३
नाथसकलआनन्दनिधि कहहुसोचरितबखानि ।।
जेहिते उपजै सकलसुख होइ सकल अघहानि ४
देखि उमाकै विमल मति रविचरणनपर नेह ।।
बोले शङ्कर वचनवर विगत सकल सन्देह ५

चौ० ॥ मुनिगिरिजा के वचन सुहाये। सरल भक्तियुत शिवमनभाये ॥ हर्षि शम्भु कह सुनहु भवानी। आदितमहिमा कहों बखानी ॥ समुझि प्रताप मगन शिव भयऊ। पुनि धीरज धरि अस्तुति ठयऊ ॥ श्रीशङ्कर जय आदि-भवानी। गावहिं यश सुरनर मुनिज्ञानी ॥ अमित प्रभाव वेद नहिं जाना। तवमहिमा जानहिं भगवाना ॥ चरण कमल बन्दौं करजोरी ॥ वारं-वार बहोरि बहोरी ॥ गुरुपद परसि ज्ञान कहँ पाऊं। सूर्य्यपुराण मनोहर गाऊं ॥ करों अरम्भ कथा शिरनाई। सुगम मार्ग मोहिं देहु बताई ॥ जो शङ्कर भाषा कैलाशा। सो मैं कथा करों पर-काशा ॥ विधि संयुक्त पठन जो करई। लोक लाभ परलोक सुधरई ॥ जिहिविधि शम्भु उमा सन गाई। तिमि सन्तहु मैं कहौं बुझाई ॥ शिव संवाद बड़ा विस्तारा ॥ सो संक्षेप करौं उपचारा ॥ दो० ॥ आदित कथा पुनीत है गावहिं शम्भु सुजान ॥ तीनलोक छवि उदित है महिमा करौं बखान ६ ॥ चौ० ॥ सूर्य्य देवता सुमिरों तोहीं। सुमिरत ज्ञान बुद्धि दे मोहीं ॥ ज्योति-स्वरूप अदित बलवाना। तेजप्रताप अतुल

भगवाना ॥ तुम आदित परमेश्वर स्वामी। अलख निरञ्जन अन्तरयामी ॥ वरणि न जाय ज्योति की लीला। धर्मधुरन्धर परम सुशीला ॥ ज्योतिकला चहुँ ओर बिराजै। जगमग कुण्डल कानन छाजै ॥ नीलवरण छवि तुरग सवारी। ज्ञाननिधान धर्म्म व्रतधारी ॥ परम पुनीत अदित अविनासी। अजय अनादि सकल घट वासी ॥ जासु कथा मैं कहौं बखानी। मन अस्थिर करि सुनहु भवानी ॥ महिमा आदित अगमअपारा। तीनिउँभुवन ज्योति उजियारा ॥ गिरिजा सुनहु कथा मन लाई। मैं तोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥ बांझ सुनै यकमास पुराना। मन वच कर्म्म धरहि व्रत ध्याना ॥ नेम धर्म सों करै अहारा। द्वादश बर्त्त रहै इतवारा ॥ कुश आसन पर करि विश्रामा। हरषित लेइ सूर्य्य के नामा ॥ जो कछु शक्ति पुण्य सो करई। साधु सन्त सेवा अनुसरई ॥ इतनी टेक धरै त्रिय जबहीं। होइँ दयालु दयानिधि तबहीं ॥ निश्चय प्रसन्न होहिं भगवाना। पांच पुत्र होइँ अगिनि समाना ॥ तिनसों जीति सकै नहिं कोई। बुद्धि ज्ञान गुणनिधि हों सोई ॥

दो० ॥ बांझ कथा मन लावै टेक धरै व्रत ध्यान ॥ निश्चय पांच पुत्र होइँ योधा अग्निसमान ७ ॥ चौ० ॥ सूर्य्य कथा रस अमृत बानी। मन अस्थिर करि सुनहु भवानी ॥ कुष्ठवरण हो जाको अङ्गा। सो यह कथा करै परसङ्गा ॥ रवि दिन भोजन करै अलोना। पुहप सुबास चढ़ावहि दोना ॥ विप्र बुलायकै होम करावै। वही भस्म लै अङ्गलगावै ॥ निश्चय कुष्ठ वरण मिटिजाई। धनि महिमा है सूर्य्य गुसांई ॥ दो० ॥ जाके वरण अङ्ग महँ सो नित सुनै पुरान ॥ निश्चय विमल अङ्ग तेहि करहिं सूर्य्य भगवान ८ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य्यमाहात्म्येउमामहेश्वर संवादेबांझपुत्रकुष्ठीकायापावनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

—०—

चौ० ॥ सूर्य्यकथा मैं कहौं बुझाई। मन वच कर्म्म सुनहु चित लाई ॥ जो नर होइ अन्ध द्वौ लोचन। सो यह कथा सुनै दुखमोचन ॥ निशि दिनकरै अलोन अहारा। विविध भांति करनेम अचारा ॥ पीपर तरुतर सुनहि पुराना। धूप

दीप नैवेद्य विधाना ॥ अन्धा लोचन निश्चय पावै। जो यह कथा सुनै चित लावै ॥ कहौं कथा रस अमृत बानी। मन आनँद करि सुनहु भवानी ॥ दँडवत देइ करै व्रत ध्याना। सो न तुलहि यहि कथा समाना ॥ सूर्य्य कथा जो सुन मन लाई। तापर आदित करहिं सहाई ॥ कहैं शम्भु यह कथा पुनीता। सूर्य्य प्रताप मैं भयउँ अजीता ॥ दो० ॥ अन्धा लोचन पावै जो जानै प्रभु एक ॥ पुलकित प्रेम पुनीत मन धरै कथा पर टेक १ तीन भुवन महँ स्वामी ज्योतिकीन परकास ॥ हर्षि कथा गुण गावै जहां सूर्य को वास २ ॥ चौ० ॥ अवरमहातम सुनहुभवानी। अमित प्रभाव न सकहुँ बखानी ॥ सोइ मनोरथ रवितेहि देहीं। प्रातसमय रवि नामहिं लेहीं ॥ तेहि फल बांछित सुनहु भवानी। सूर्यदेवतासम नहिं दानी ॥ सकल कामना तुरतहि देहीं। सूर्य महातम जानब केहीं ॥ दूसर भाव बहुरि लखि लीजै। सूर्य नाम जपि कारज कीजै ॥ नाम महातम सुनहु भवानी। बारहिंबार महेश बखानी ॥ जाके ऋण होवै अधिकारी। सो यह कथा करै अनुसारी ॥ निश्चय ऋण सो सब मिटिजाई।

सूर्य कथा जो सुन मनलाई ॥ जाकहँ गाढ़ परै अति भारी । सो यह कथा करै अनुसारी ॥ पांच बर्त्त नर करै इतवारा । मन वच कर्म कथा अनुसारा ॥ चंदन अगरु को लेपन करई । निशि दिन ध्यान सूर्य को धरई ॥ निश्चय गाढ़ सकल मिटि जाई । धनि महिमा है सूर्य गोसाँई ॥ बर्त्त करै प्रभु नाम उचारै । जन्म जन्म के पातक जारै ॥ जपतहि नाम कला रवि होई । जो इहि भाँति करै नर कोई ॥ उघरहिं पटल ज्ञान के भारी । रोग दोष सब तुरत निवारी ॥ एते सूर्य नाम जपु भामा । जपतहि नाम होइ सुखधामा ॥ सूर्य प्रभाव अमित सब गावा । कुछ संक्षेपहि तुमहिं सुनावा ॥ दो० ॥ जाकहँ गाढ़ परै अति सो नित सुनै पुरान ॥ धनि प्रताप आदित्यको महिमा करौं बखान ३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्यमाहात्म्येउमामहेश्वरसंवादेसंकटमोचनमहिमाअवगाहवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

———

चौ० ॥ सूर्य कथा मैं कहौं बुझाई। मन वच कर्म सुनहु मनलाई ॥ निर्मलदृष्टि ताहि कै होई। नैन दोष देवै सब खोई ॥ सूर्य महातम सुनहु भवानी। सूर्य समान अवर नहिं दानी ॥ अति निर्म्मल तन ताकर होई। सूर्यपुराण पढ़ै जो कोई। विमल पुनीत सूर्य की लीला। कहँ लग-वरणौं सुनहु सुशीला ॥ तब तेहि मिटै आपदा भारी। निश्चय पाठ करै अधिकारी ॥ धनि महिमाहै सूर्य गोसाँई। तरिहहिं जगत लोग गुण गाई ॥ यात्रा को नर चलहि विदेशा। सो यह पढ़ै पुराण सुवेशा ॥ निश्चय तासु सकल शुभ होई। लाभ कुशल घर आवहि सोई ॥ दो० ॥ जब यात्रा कहँ नर चलै सो शुचि सुनहिपुरान ॥ निश्चय सकल मनोरथ पुरवहिं श्रीभगवान १ ॥ चौ० ॥ ऐसी महिमा आदित देवा। करइँ जासु सुर नर मुनि सेवा ॥ मिटहिं सुगाढ़ सकल तन तासू। पुलकित तनकरि हृदय हुलासू ॥ दीना-नाथ निरञ्जन साँई। महिमा मुखते वरणि न जाई ॥ मन वच कर्म सो सुनु मनलाई। सूर्य कथा मैं कहौं बुझाई ॥ जो नर कहुँ संग्रामहि जाई। पाठ करै कछु धर्म कराई ॥ रिपु संहार

होइ क्षणमाहीं । जीव घात कर संशय नाहीं ॥ करि अस्नान कथा चित देई । हरषित नाम सूर्य के लेई ॥ तदुपरि रिपु सँहार महि करई । जीतै शत्रु न हारा परई ॥ निश्चय सूर्यप्रतापबखाना । कथा प्रसिद्ध सकल जग जाना ॥ रिपुहि जीति जे देइ गोसाँई । आदित महिमा वेदन गाई ॥ दो० ॥ असि महिमा आदित्यकर वरणौं सहित उछाह ॥ सुनहु उमा पुलकित तनै कीरति प्रभु अवगाह ॥ २ ॥ चौ० ॥ कहौं कथा पुनीत शुभ बानी । सूर्य महातम सुनहु भवानी ॥ कार्त्तिक चैत पुनीत दिन भारी । साजहिं अरघ आरती नारी ॥ चन्दन अरघ कपूरकिबाती । पूजहिं सूर्य सकल बहुभांती ॥ जौन कामना मनमें राखै । पुलकित ध्यान धरै मुख भाखै ॥ सोकारज पुरवहिं भगवाना । असि महिमा आदित बलवाना ॥ दो० ॥ लीला अगम अपार है कृपासिंधु भगवान ॥ आदित चरितपुनीत है मन अस्थिर करुध्यान ३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य माहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेसंग्रामशत्रुनिपातनो
नामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौ० ॥ सुनहु उमा प्रभु चरित अपारा। नाथ कथावरणौं विस्तारा ॥ सिंहलद्वीप इकनग्र को नाँऊ। तेहिपुरबसहिंपराक्षितराऊ ॥ महापुनीत धर्म उपकारी। तासु भवन इक कन्या क्वारी ॥ शिशुपनगत जब भई भवानी। नीति धर्म करती मन जानी ॥ सो नितकरैं अदितकै पूजा। सेवहि सूर्य अवर नहिं दूजा ॥ प्रथमें सूर्य भक्ति मनलाई। लखि आचरण प्रसन्न गोसाँई ॥ विधि-बश एक समय अस भयऊ। सो कन्या सुरसरि-तट गयऊ ॥ मज्जन करन लगी सो बाला। राजतउर गजमुक्तामाला ॥ तेहि अवसर ऋषि नारद आये। देखत कन्यारूप लुभाये ॥ ठाढ़ भये मुनि सुरसरि तीरा। लीन उछँग कन्याको चीरा ॥ कन्या जलमों करत पुकारा। अँबर देहु अब ऋषय हमारा ॥ कह नारद सुनु कन्या बाता। मोसन करहु पुरुष कर नाता ॥ सुनु मुनि ज्ञानी भे तुम बौरा। ऐसो वचन कहै को औरा ॥ अनुचित वच जनि कहौ मुनीशा। हम सम कन्या लाग पचीशा ॥ विनती करौं सुनो ममबानी। अँबर देहु मुनिवरबिज्ञानी ॥ दो० ॥ नगिनि नारि जलमों रहै मुनि सों कहै कर

जोर ॥ कृपा करहु पुलकित तनै अम्बर दीजै मोर १ ॥ चौ० ॥ जब कन्या विनती बहुलाई । सुनतहिमुनिकहँ लज्जा आई ॥ अम्बर दै मुनि भवन सिधाये । तेही समय सूर्य्य तहँ आये ॥ जो जो मुनिवर अजगुत कीन्हा । सो आदित सों कहबे लीन्हा ॥ जहँ मैं करत रही असनाना । मुनि अम्बर लैगा अज्ञाना ॥ त्यही समय आये शिव मोरा । संग उमा जस चन्द्र चकोरा ॥ शक्ति सहित प्रभु नायों माथा । पूंछी कुशल हर्ष गुण गाथा ॥ कुशल कही शिव मन मुसुकाई । बैठे प्रभु तब कहा बुझाई ॥ पूंछा प्रभु कह दुहुं कर जोरी । नाथ सुनहु विनती इक मोरी ॥ कह अपराध कीन्ह मुनि भारी । सो सब मोसन कहौ विचारी ॥ तब प्रभुकहा सुनो शिवभोरा । कन्या प्राक्षित सेवक मोरा ॥ सुनहु हृदय धरि मुनि विज्ञानी । लखेउ कुदृष्टि भयउ अज्ञानी ॥ तेही कारण शाप जो दयऊ । तातें अङ्ग वरण मुनि भयऊ ॥ इतना सुनि मुनि मन पछिताना । दृष्टि विलोकि तजा मुनि ध्याना ॥ अस सुनि वचन क्रोध प्रभु भयऊ । कन्या सह प्रभु मुनि पहँ गयऊ ॥ दो० ॥ मुनि सों कहा वचन तब

क्रोध कियो मन लाइ। असकौतुकतुम कीन्हा सो मोहिं कहौ बुझाइ २ ॥ चौ० ॥ मुनि कर जोरिकै विनय सुनाये। गहि पद कमल सूर्य्य-गुण गाये ॥ कह मुनि सुन प्रभु विनय हमारी। मोसन चूक भई अतिभारी ॥ तब प्रभु कहा सुनौ मम बानी। वहां के लोग सकल गुण ज्ञानी ॥ तातें अब तुमले मम शापा। जस कीन्ह्यो तस भुगतहु पापा ॥ छन्द ॥ जयजय सुरनायक जनसुखदायक प्रणतपाल रविनमो नमो। जयजयसुखरासी सबघटवासी प्रणत-पाल रवि नमो नमो ॥ जयअसुरनिकन्दन मुनि-मनरञ्जन प्रणतपाल रवि नमो नमो। विनती प्रभुमोरी मैं मतिभोरी प्रणतपाल रविनमोनमो ॥ करिकृपाअनूपं ज्योतिस्वरूपं प्रणतपाल रवि नमो नमो। सो प्रभु वर दीजै जग यश लीजै प्रणतपाल रवि नमो नमो ॥ अघताप नशावन जग यश पावन प्रणतपाल रवि नमो नमो। सुनहूप्रभुस्वामी अन्तरयामी प्रणतपाल रवि नमो नमो ॥ श्रीअमृतबानी शम्भु भवानी प्रणतपाल रवि नमो नमो ॥ दो० ॥ पुलकित प्रेम पुनीत ते निश्चय सुनै पुरान ॥ रविदिन

अशन अलोन करि दृढ़ राखै उरध्यान ३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीसूर्य्यमाहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेकन्याशापमोचनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

चौ० ॥ पम्पापुर यक नगर को नाऊं । हलधर विप्र बसै तेहि गाऊं ॥ नगर बसै मानो कैलासा । धर्मकथा तहँ होइप्रकासा ॥ पूजा सूर्य कि करैं दिनराती । निशि दिन टेक धरहि बहु भाँती ॥ कोटि अग्नि चारों दिशि माहीं । श्री सूरज के आश्रम जाहीं ॥ तेज प्रताप प्रभु अरुण विशाला । निशि दिन बरै अग्नि की ज्वाला ॥ तहँ तड़ाग इक जटित सोहावा । चारिउघाट सुबर्णबँधावा ॥ तहां थंभ इक अरुण विशाला । शतयोजन सो रहै पताला ॥ वही थंभ आदितको वासा । प्रातखंभसोलाग अकासा ॥ इहि विधि आदित आवहिं जाहीं । सुनौ कथा पुनीत मन माहीं ॥ लक्ष योजन पर उदय कराहीं । सहस योजन यक पलमहँ जाहीं ॥ प्रात होत उदयागिरि बासा । अस्ताचल पर करहिं

निवासा ॥ सुनहु कथा पुनीत मन माहीं। कहिहौं अर्थ उमा तोहिपाहीं ॥ दो० ॥ आदित कथा पुनीत है सुनहु उमा मनलाय ॥ जो नर सेवै शुद्धमन सूर्य कथा गुण गाय १ ॥ चौ० ॥ सूरज कथा सुमिरिसंसारा। महिमा आदित अगम अपारा ॥ जो यह कथा पढ़ै मनलाई। तापर आदित करहिं सहाई ॥ जो नर करै बणिज व्यवपारा। सो पढ़ि कथा करै अनुसारा ॥ ताके धन लक्ष्मी बहु होई। अमित प्रकार मिलै सुख सोई ॥ जो यह कथा चित्त दै कहई। मिटै गाढ़ बहु सुखकहँ लहई ॥ धन्य सुदेश सूर्य जह राजै। जासु तेज चहुँ ओर विराजै ॥ कथा पुनीत सु-अमृत बानी। औरिउ महिमा सुनहु भवानी ॥ दो० ॥ जाकहँ गाढ़ परै अति सो यह सुनै पुराण। निश्चय सूर्य प्रताप ते होइ तासु कल्याण २ धनि आदितपरमेश्वर महिमा अगम अपार ॥ तीनि भुवन छवि उदित है भयो सकल उजियार ३ जैजै करैं लोग सब कुष्ठी सुनै पुरान ॥ पावहिं काया आपनी महिमा श्री भगवान ४ ॥ चौ० ॥ जो मन इच्छा राखै कोई। पढ़त कथा फल पावै सोई ॥ तीनि भवन के

सूरज दाता। हर्षिकथा गावै सुरत्राता॥ सुरनर मुनि सब अस्तुति ठाना। भये प्रसन्न आदित भगवाना॥ दो०॥ सबगुण आगर शीलयुत शोभासुमतिविशाल॥ मन वच कर्म ते हर्षहिय मानहिं प्रेम कृपाल ५॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य्यमाहात्म्येउमामहेश्वरसंवादे पंपापुरदेशेगतिविधान वर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

चौ०॥ सुनि गिरिजाचक्रित भै बानी। तेज प्रताप सुमिरि हरषानी॥ धनि आदित जिनकी यह लीला। धर्म धुरंधर परमसुशीला॥ अवरि पुनीत कथा सुनु सोई। कहहुँ सकल नहिं राखौं गोई॥ बोली उमा सहित अनुरागा। नाथसुनत मोहिं अति प्रिय लागा॥ पूर्वदिशा कहँ उगहिं गोसाँई। सो मोहिं कथा कहौ समुझाई॥ कहन लगे शिव कथा रसाला। जेहि विधि पूरब उदय कृपाला॥ गिरिजा सुनौ कथा मन लाई। पूर्वदिशा जिमि उगहिं गोसाँई॥ दो०॥ पूर्व दिशा अति अगम है लीला वरणि न जाइ॥

अवर कथा आरम्भ अब कहौं तोहिं समुझाइ १ ॥

चौ० ॥ पूर्वदिशा इक शिवपुर देशा। तहां के राजा रूपमहेशा ॥ उन समान कोइ आन न दूजा। नगरके लोग करैं पदपूजा ॥ यहि विधि नगर सकल उजियारा। तहां एक है अगम पहारा ॥ सहस कोस परबत परमाना। तहां बसहिं आदित भगवाना ॥ दोइ पहर तहँ करहिं निवासा। फिर पश्चिमदिशि परमहुलासा ॥ यहि विधि आदित आवहिं जाहीं। सुनहु कथा पुनीत मन माहीं ॥ मन वच कर्म्म कथा गुण गाई। सूर्य चरित मैं तुम्हैं सुनाई ॥ जो नर कथा सूर्य्य की गावै। चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधावै ॥ अस्तुति हर्षित सुनु चितलाई। सूर्य चरित्र कहौं समुझाई ॥ मन थिर करि तहँ सुनहिं भवानी। सूर्य्य कथा रस अमृत बानी ॥ छन्द ॥ तुम प्रभु स्वामी अन्तरयामी ज्योति कला छवि उदित महाना। रूपनिधाना श्री भगवाना करहु कृपा पातक हरना ॥ छवि ज्योति विराजै कुण्डल छाजै तव प्रताप महिमा वरना। प्रभुदीनदयाला होहुकृपाला रूपराशि भगवाना ॥ दो० ॥ सब विधि इच्छा पूरवै पावै

कायादान ॥ ऐसो अन्तर्य्यामि प्रभु कृपासिन्धु भगवान् २ बांझ पुराण स्थिरसुनै सुचितकथा मनलाव ॥ पुलकित प्रेम पुनीत ते निश्चय सुत फलपाव ३ अन्धा लोचन पावई निश्चय सुनै पुरान ॥ लवणत्यागि भोजन करै दृढ़राखै रवि ध्यान ४ ॥ चौ० ॥ जब जगदीश विनय बहु कीन्हा। हर्षित आदित दर्शन दीन्हा ॥ गिरिजहि दियो प्रभु आशिरबादा। शिव सँग रहौ सदा मरयादा ॥ सदा अचल अहिवात तुम्हारी। सुनहु वचन गिरिराजकुमारी ॥ अस कहि सूर्य्य गये निज धामा। गिरिजा जपन लगी प्रभु नामा ॥ फिरि हँसि बोली मातु भवानी। तुम प्रभु तीनलोक के दानी ॥ एक कथा प्रभु पूछौं तोहीं। कहौ बुझाइ नाथ अब मोहीं ॥ दो० ॥ करहु कृपा प्रभु मोहिंपर अतिविशाल छविछाज ॥ तेज प्रताप त्रिभुवन महा ज्योति कला सुविराज ५ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य्यमाहात्म्ये उमामहेश्वरसंवादेपूर्वदिशिसूर्य्यागमनोनाम षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

—:०:—

चौ० ॥ कह देवी शिवशङ्कर सांई । अवर कथा मोहिं कहो बुझाई ॥ यक संदेह अवर मन मोरे । कहौ नाथ बिनवौं करजोरे ॥ उत्तर दिशि कहँ उदय गोसांई । सो मोहिं नाथ कहौ समुझाई ॥ कहन लगे शिव कथा रसाला । जेहि विधि उत्तर उदयकृपाला ॥ उत्तर दिशिकै कथा कहानी । मन अस्थिरकरि सुनहु भवानी ॥ उत्तर दिशि इक नगर विशाला । तहां के राजा मदनगोपाला ॥ तहां शैल इक बड़ विस्तारा । सौ योजन कर ऊंच पहारा ॥ झांपै भानु किरण नहिं आवै । इहि विधि नगर अँध्यार जनावैं ॥ निशि दिन नगर सकल अँधियारा । उदय भानुहू ज्योति-अँध्यारा ॥ दो० ॥ धर्मधुरन्धर अइस प्रभु महिमा वरणि नजाइ ॥ जो नर दृढ़ ध्यानहि धरै ताकर पाप नशाइ १ ॥ चौ० ॥ कलियुग वास कीन तहँठयऊ । तबते पापिमलेच्छहि भयऊ ॥ ताते कबहुँ उदयनहिं भानू । मैं तोहिं अर्थ कहौं परमानू ॥ एक समय अस अचरज भयऊ । नारद मुनि तेहि पुर चलिगयऊ ॥ देखा नगर सकल अँधियारा । धर्मकथा कर नाम बिसारा ॥ फिरि फिरि नगर सकल मुनि देखा । पाप

सिवाय अवर नहिं लेखा ॥ मन महँ नारद कीन बिचारा। काहे नगर भयो अँधियारा ॥ अस कहि नारद कोपेउ जबहीं। नगरहि शाप दीन मुनि तबहीं ॥ कुष्ठी होउ सकल नर नारी। धर्म कथाकर नाम बिसारी ॥ कुष्ठवरण भे सब के अंगा। आठौ अंग सकल तनभंगा ॥ कोउ न रहा कुष्ठ सों बाचा। सब के कुष्ठ वरण भे साँचा ॥ व्याकुल भये सकल नर नारी। त्राहि त्राहि सब करत पुकारी ॥ शाप देइ मुनि रवि पहँ आये। उत्तर दिशि के अर्थ सुनाये ॥ सुनत कथा आदित मुसक्याने। कहां गये मुनि उतर भुलाने ॥ शापित करि उत्तर कहँ आये। पीछे हम कहँ बात जनाये ॥ अबकहु मुनि मैं पूछौं तोहीं। केतक दिवस वरण रहि मोहीं ॥ कृपासिन्धु प्रभु परम अगाधा। वरण भये तन केहि अपराधा ॥ सो मोहिं नाथ कहौ समुझाई। जेहिते अंग वरण मिटिजाई ॥ तब प्रभु कहा सुनो ममबानी। उहांके लोग सकल गुणज्ञानी ॥ बिनु अपराधहि अनुचित कीन्हा। कारणरहित शाप तुम दीन्हा ॥ सबकहँ शापदीन तुम भारी। व्याकुल भये सकल नर नारी ॥ कह प्रभु केहिके आज्ञा

लीन्हा। उत्तर जाइ शाप तुम दीन्हा॥ दो०॥
अब मैं कहौं तोहि सन कथा पुनीत अनंग॥
उग्र शाप आपन करहु वरण मिटै तव अंग २॥
चौ०॥ नीकवचन नारद मन माना। उत्तर दिशि-
कहँ कीन पयाना॥ चलत बार मुनि शकुन
जनाये। पुलकित वदन हर्षि उठि धाये॥ द्वादश
दिन महँ उत्तर गयऊ। आपन शाप उग्र मुनि
कियऊ॥ सब कर कुष्ठ नीक भा जबहीं। नारद
उग्र शाप किय तबहीं॥दो०॥ नारद उत्तर जाइ
कै शाप अनुग्रह कीन। तेज प्रताप आदित्य को
पुनि पुनि वरणै लीन ३॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्यमाहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेनारदशापमोचनो
नामसप्तमोऽध्यायः ७॥

—:o:—

चौ०॥ अस कहि नारद रवि पहँ आये।
उत्तर दिशि के अर्थ सुनाये॥ शाप अनुग्रह
कीन्ह गुसाँई। धनि प्रताप तुव वरणि न जाई॥
अस सुनि आदित हरषित भयऊ। दया भई
मुनि पर अस कहेऊ॥ अबजनि ऐसेभर्मभुलाहू।

आशिरबाद लेहु घर जाहू ॥ पुनि अशीश प्रभु मुनि कहँ दीन्हा । मिटा वरण तन कंचन कीन्हा ॥ बहुत कृपा मुनिपर अनुसारी । वरणि न जाइ महातम भारी ॥ दो० ॥ श्रीसूरज त्रिभुवन महँ दाता उदय समान । लावै मन जो नर कथा सो पावै शुभ थान १ । चौ० ॥ बिदा मांगि मुनि घर कहँ आये । हर्षित भये सूर्य गुण गाये ॥ जो नर कथा सूर्य की गावै ॥ चढ़ि विमान बैकुण्ठ सिधावै ॥ जो नर ध्यान धरै मनलाई । तापर आदित होइँ सहाई ॥ धनि प्रताप आदित बलवाना । तेजपुञ्ज छवि अग्नि समाना ॥ हर्षित मंगल गावहिं नारी । हर्ष सहित पूजा बिस्तारी ॥ करि पूजन अस्तुति अनुसारी । सकल विषाद मिटी अतिभारी ॥ दो० ॥ अमितवरण प्रभुअमितफल देहिं विचारि कृपाल ॥ जगतविदित सादरसुनहु आदितकथा रसाल २ ॥ चौ०॥ धनि आदित कायाके राजा । जासुज्योतिचहुँ ओर विराजा ॥ अस्तुतिसूर्य कि नारद गावा । कोटि विप्र तहँ नेवति जेंवावा ॥ अश्वमेधयज्ञकरन मुनि लागे । तीनिभुवन के दारिद भागे ॥ सब कहँ नारद नेवति पठाये ।

रथ चढ़ि तहाँ देवता आये ॥ ब्रह्मा विष्णुआदि सब झारी। आये सहित सकल वर नारी ॥ ब्रह्मा वेद पढ़ैं झनकारी। हर्षित मंगल गावहिं नारी ॥ अक्षत चँदन पान पकवाना। पूजा करैं धरैं मुनि ध्याना ॥ हर्षसमेत सूर्य गुण गावैं। शंख मृदंग सुझाँझ बजावैं ॥ दो० ॥ यज्ञ कीन मुनि बृहत अति शोभा वरणि न जाइ ॥ कोटि तेंतीस देव तहँ हर्षैं रविगुण गाइ ३ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य माहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेनारदयज्ञवर्णनोनाम
अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

—:०:—

चौ० ॥ जो नर धरै कथा पर ध्याना। ताकर पुत्र होइ कल्याना। जो यह कथा कहै मनलाई। तापर आदित होहिं सहाई ॥ धनि प्रताप आदित बलवाना। तेज प्रताप अतुल भगवाना ॥ दो० ॥ गिरिजा पूंछैं शंभु सन सूर्य चरित मन लाइ ॥ दक्षिण दिशिकहँ उग्रहीं सो मोहिं कहौ बुझाइ १ ॥ चौ० ॥ कहहिं शंभु सुनु शैल-कुमारी। सूर्यचरित्र कहौं अनुसारी ॥ कहन लगे

शिव कथा रसाला । जेहि विधि दक्षिण उदय कृपाला ॥ कहहिं शंभु सादर समुझाई । सुनहु सती प्रिय मन चितलाई ॥ दक्षिण दिशि इक नगर अनूपा । जैमल बिप्र तहाँ कर भूपा ॥ हर्षित भजन करै दिन राती । तहाँ बसैं प्रभु सब सुख भाँती ॥ यहि बिधि प्रभु की ज्योति बिराजै । अनहद नाद घंट ध्वनि बाजै ॥ तेंतिस कोटि देवता तहँवाँ । श्रीसूरज के आश्रम जहँवाँ ॥ दक्षिण दिशि इक काशी प्रागा । तहाँ बसहिंसु-रसरीविभागा ॥ दो० ॥ दक्षिण दिशा पुनीत है सुनहु उमा मनलाइ ॥ अगिल अर्थ जस होइहै सो मैं कहौं बुझाइ २ ॥ चौ० ॥ कलियुग अर्द्ध बीति जब जै है । मानुष को तब मानुष खैहै । होइहै तब अवतार कलंकी । मानुष तनु होइहैं यशपंकी ॥ तब दक्षिण रवि ऊगहिं जाई । आगिल अर्थ कहौं समुझाई ॥ धर्म कथा होइहै दिन राती । नेम धर्म करि हैं बहु भांती ॥ विप्र जेंवाय आपु तब खैहैं । निशिदिन कथा सूर्य की गैहैं ॥ घर घर लक्षिमी ल्यई निवासा ! धर्मकथा ह्वइ है परकासा ॥ मिथ्या वचन कोउ नहिं भाखी ! निशि दिन टेक सूर्य पर राखी ॥ धर्मविचार सूर्य

जब करि हैं। द्वादश कला ज्योति तब धरि हैं॥ अंधा निश्चय सुनै पुराना। ताकहँ नयन देइँ भगवाना॥ दो०॥ द्वादश कला ऊगि हैं तब आदित जग आइ॥ पूर्व जन्म के पाप सब कथा पढ़े क्षय जाइ ३॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्यमाहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेदक्षिणदिशाविधान
वर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

चौ०॥ बोलीं उमा बहुरि हरषाई। करिय दया कछु कहिय गोसाईं॥ जेहि सेवन करि नर सुखपावहिं। जाहि भजे जग कुगति न आवहिं॥ असि रवि महिमा अमित अपारा। ताकर सुयश कहहु विस्तारा॥ जेहि करि मुक्ति लहैं सब प्रानी विस्तर सहित सो कहौ बखानी॥ अति उत्तम रवि यश अवगाहा। तेहि सुनिहौं मैं सहित उछाहा॥ किमि स्वरूप किमि रूपहि करहीं। किमि शीतल किमि तेजहि धरहीं॥ किमि सब मासन उदय गोसाँई। किमि व्रत कर नर कहब बुझाई॥ जेहि सुनिहोइ ज्ञान अधिकारी।

सो सादर अब कहौ पुरारी ॥ अस कहि शिव पद बन्दन कीन्हा । हर्षित शङ्कर आसन दीन्हा ॥ दो० ॥ धनि धनि गिरिजा प्रश्न तुव कहेउ मोहिं प्रियलाग ॥ रवि चरित्र पावन परम कहहुँ सहित अनुराग १ ॥ चौ० ॥ रविमण्डल कर सुनहु पसारा । जिहि विधि तन अस्थूल अपारा ॥ दश हजार योजन चहुँ फेरा । रवि मण्डल जानहु श्रुति टेरा ॥ अति उतंग तन तेज अपारा । गये समीप न होइ उबारा ॥ दश सहस्र पुनि नयन गनाये । अति विशाल सब बेदन गाये ॥ उदयहोत त्रिभुवन तम भागहिं । तेहिसन नितप्रति हम वर मांगहिं ॥ उदय होत विधि रूपहि जानों । मध्याह्ने श्रीविष्णु बखानों ॥ सन्ध्या समय रुद्र गति हेरी । तिहूं काल तिहुँ मूरति टेरी ॥ अस अनुमानि सदा पद बन्दी । निश्चय करि विश्वास अनन्दी ॥ पावहिं गति जे नर बड़भागी । जाकी दृष्टि चरण प्रभु लागी ॥ दो० ॥ यहि विधिसों जानहु उमा रवि पूजा जेहिहेत ॥ होत कामना सिद्धि सब चारो फलको देत २ ॥ चौ० ॥ अवरिउ सुनु प्रभु कै प्रभुताई । सूर्य महातम वेदन

गाई ॥ द्वादश मास उदय रवि करई। द्वादश तन धरि वेद उचरई ॥ बारह मास के बारह नामा। कहौं विचारि आनु उर बामा ॥ माघ मकर सब मासननीका। वरणत वेद शास्त्र कह ठीका ॥ मकर उदय रवि वरुण सुनामा। सुमिरत ताहि होत सब कामा ॥ फागुन सूर्य कुम्भ असनामा। धरतहि ध्यान होय मनकामा ॥ चैतमीन रवि उदय कराही। नाम मदन अँग जानिय ताही ॥ माधव मास मेष जब होई। भानु नाम अस कह सब कोई ॥ दो० ॥ जेठ इन्दु रवि उदयमें सब प्रकार सुख देहिं ॥ मिथुन अषाढ़ बखानिये रवि बुध नामहि लेहिं ३ ॥ चौ० ॥ श्रावण कर्क नाम सब हेरा। नाम गुमास्तव वेदन टेरा ॥ भादौं सिंहलसी रवि होई। यम अस नाम उदय रवि सोई ॥ आश्विन कन्या राशि गनाये। सुवर्ण रेत अस नाम कहाये ॥ कातिक तुला दिवाकर नामा। उदय होइ जग रवि सुखधामा ॥ अगहन वृश्चिक श्रुति कह नामा। शिवष्ट नाम पुरवहिं सब कामा ॥ पौष मास धन राशि गनाये। विष्णु सनातन नाम कहाये ॥ इहि विधि द्वादश मासन माहीं।

द्वदश नाम सों उदय कराहीं ॥ अवरहु वेद कहैं इमि बानी। मास मास रवि उदय भवानी ॥ दो० ॥ सुनहु उमा रविव्रत कर रवि तोषहिं सो विधान ॥ जाहि किये शुभगति मिलै वरणहिं वेद पुरान ४ ॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य्यमाहात्म्येउमामहेश्वरसंवादे द्वादशमासरविउदयव्रतवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

———

चौ० ॥ मन दृढ़ करि सुनु शैलकुमारी। बरत विधान कहौं विस्तारी ॥ शनीवार लघु भोजन कीजै। अरु आदित कर धर्म्म करीजै ॥ दण्ड कष्ट करि पूर्व्वहि कहिये। तब अस्नान चित्तमहँ धरिये ॥ नाभि मन्त्र जल सेवन कीजै। द्वादश नाम सूर्य्य के लीजै ॥ उदय होत तब अञ्जलि देई। सातबार प्राथना करेई ॥ तब निर्म्मल धोती व उपरना। होम करै मन्त्रहि हिय धरना ॥ बन्दि दण्डवत रवि कै करई। विविध भांति पूजा मन धरई ॥ अगहनमास के बरत बखानौं। ताकी विधि अब सुनि उर आनौं ॥ अगहन तुलसी दल त्रय खांडे। व्रत करी सूक्षम

होइ पांडे ॥ पोष मास गोघृत पल तीनी। अति सूक्षम काया करि दीनी ॥ दो० ॥ माघ मास व्रत कीजिये मुष्टि तीनि तिलखाइ ॥ व्रत विधान इमि जो करै सो ऋषिलोकहि जाइ १॥ चौ०॥ फागुन मास के व्रत बुध कहई। क्षीर तीनिपल अधिक न चहई ॥ चैत मासकर सुनहु विधाना। दधि पल तीनि सो वेद बखाना ॥ वैशाखहि गो गोबर आनहु। तीनि पला सोइ अधिक न जानहु ॥ जेठ मास पुनि अस परकासा। तीनि अञ्जली जल अभ्यासा ॥ मास अषाढ़ श्रावणव्रत नीका। शकर तीनि पल अतिसुठि जीका ॥ भादौं मास अमित सुखदाई। तीनि पला गोमूत्र सुहाई ॥ क्वार मास सो अधिक सुहावा। गण्डक भरिजल सो यह पावा ॥ कातिक हव्य तीनि पल खाई। सूरजव्रत करिये हर्षाई ॥ दो० ॥ इहि विधि बारह मास के व्रत विधान कहि दीन ॥ रविहि पूजि विधिवत सहित मुनि दुर्लभ गति दीन २ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीसूर्यमाहात्म्येउमामहेश्वरसंवादेद्वादशमासव्रतविधानवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

चौ० ॥ बोले शम्भु बहुरि मृदु बानी। अष्ट विकार सु तजेहु भवानी॥ जो कोइ करै व्रत्तको ध्याना। सो अठ कर्म्महि तजै निदाना॥ तैल तक्र अवँरा नहिं खाई। चौथ अमिष सोउ तजै बनाई॥ पँचयें निशि भोजन कहँ त्यागै। उष्ण वारि दुख महँ नहि मांगै॥ सप्तम लवण सबै परिहरई। अपर अनाज चित्त नहिं धरई॥ आठ विकार तजै जब प्रानी। व्रत प्रमाण तब होत भवानी॥ सो सुनि उमा पुलक तन भयऊ। माया मोह शोच सब गयऊ॥ धन्य धन्य शिव शङ्कर स्वामी। कथा कहेउ लखि निज अनुगामी॥ जो करि तरत जगत के लोगा। करहिं अनन्द मिलहिं सब भोगा॥ कथा अपर अब कहौ गुसाँई। जाहि सुने भ्रम शोक नशाई॥ तरनि महातम अतिअवगाहा। सो संक्षेप कहौ सुरनाहा॥ बोले कृपासिन्धु वृषकेतू। कहिहौं सूर्य्य नाम कर हेतू॥ सुनु सो उमा सहित अनुरागा। कामधेनु सम नाम विभागा॥ प्रथम नाम आदित रवि केरा। सुमिरत पातक मिटहि घनेरा॥ दो०॥ दूसर नाम विचित्र अति सूर्य विभाकर भास्व॥ नाम विभाकर महातम वेद

पुराणन साख १ ॥ चौ० ॥ तीसर शङ्कर अस अवराधहु। बर्तपर्म सब यह पढ़ि साधहु ॥ चौथ प्रभाकर नामहिं हेरा। बारबार तेहि पढ़ि अस टेरा ॥ पञ्चम सहस कहै अस नामा। सुमिरत सिद्ध होत सब कामा ॥ षष्ठम नाम त्रिलोचन कहहीं। सुमिरत ताहि सकल अघ दहहीं ॥ दृगेन्द्र अस कहि सप्तम नामा। सुमिरत सकल होत मन कामा ॥ अष्टम भव सो नाम कहावा। जपै ध्यान धरि सो फल पावा ॥ नवमो नाम दिवाकर गाई। सुमिरत नाम जगत जय पाई ॥ दशमो द्वादश आतम जानहु। जपतहि पठत ध्यान उर आनहु ॥ दो० ॥ एकादश अस मूरति ऐसो नाम उदार ॥ ताके सुमिरण के किये सुगति पाव संसार २ ॥ चौ० ॥ द्वादश सूर्य्य नाम श्रुति गावा। रहा गुप्त तोहिं प्रकट देखावा ॥ तुव उर प्रीति देखि निज भामा। कहा धन्य जय सो अभिरामा ॥ सो प्रसङ्ग मैं तुमहिं सुनावा ॥ मम तन हुलसि पुलकि सो आवा ॥ अब सुनु इन अस्थानन कहहीं। पाठ योग पूजा कहँ अहहीं ॥ सब विधि शुभ सुरसरि के तीरा। या शिव मन्दिर उत्तम नीरा ॥ अथवा पीपर वर

तर गावा। बरत करै रवि पाठ करावा॥ रोग सकल तन के सब जाहीं। तेजवान तन प्रगटै ताहीं॥ पुत्र पौत्र धन सम्पति पावहिं। जो विशेष श्रुति सम्मत गावहिं॥ भाग्य विभव दिन दिन अधिकाई। तापर आदितहोइँ सहाई॥ सुर दुर्लभ सुख विविध भोगकरि। अन्त अवस्था अमर देह धरि। सुरपुर वास ताहि कर होई। जोरवि भक्ति करै नर कोई॥ दो०॥ यह इतिहास पुराणकर उमहिं कहेउ समुझाइ॥ बरत किये नामहिं लिये सो ऋषिलोकहिजाइ ३॥ चौ०॥ नित उठिकरै प्रात असनाना। पाठकरै नित सूर्य्यपुराना॥ जो इच्छा राखै मनमाहीं। सो पावहि कछु दुर्लभ नाहीं॥ निश्चय फलै मूल परतीती। सूर्य्य कथा कै ऐसिहि रीती॥

इति श्रीपद्मपुराणेश्रीसूर्य्यमाहात्म्येउमा-
महेश्वरसंवादेभाषासूर्य्यपुराणेद्वाद-
शोऽध्यायः १२॥

सम्पूर्णतामगात्॥

अथ अर्घम् ॥

एहिसूर्य्यसहस्रांशो तेजोराशेजगत्पते ॥
अनुकम्पयमांभक्त्यागृहाणार्घ्यंदिवाकर ॥
आदित्यस्यनमस्कारंयेकुर्वन्तिदिनेदिने ॥
जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यंनोपजायते ॥

सोरठा ॥

जिला कानपुर जानु ग्राम नाम मसवान पुर ॥
बाजपेय कुल मानु नाम मोर है लालमणि १ ॥

दोहा ॥

माधव कृष्ण अमावसी चन्द्रवासरे जानु ॥
१ ६ ८ ० १
संवत अङ्क वसु वसु शशी पूर्ण ग्रन्थको मानु ॥

इति ॥

———

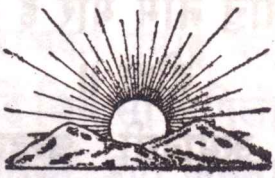

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ में मुद्रित

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य
व्रज विलास	६०)
सुखसागर	२४०)
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक–श्रीप्रताप सिंह	६०)
शिवपुराण भाषा सचित्र सजिल्द	१६०)
भक्तिसागर चरणदास सजिल्द	१२५)
योगवाशिष्ठ सम्पूर्ण दो भागों में	४७५)
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	१२०)
रामायण तु०कृ० टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल सचित्र सजिल्द	१८०)
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी (सजिल्द)	२०१)
नरसिंह पुराण	५०)

मिलने का पता

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी – **(नवल किशोर प्रेस बुक डिपो)**

१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ – २२६००१

फोन – (०५२२) २६२३३१५